

## 5字哲理名言

- 1.对事要谨慎。
- 2.对友要信任。
- 3.思路要清晰。
- 4.心胸要坦和。
- 5.念，才是当下。
- 6.头脑要清醒。
- 7.对亲要孝顺。
- 8.身不安则殆。
- 9.扶之而不隐。
- 10.忌伤人之言。
- 11.寡动则静深。
- 12.谦，才是提升。
- 13.自伐者无功。
- 14.简，才是生活。

- 15.忌无忌之言。
- 16.虚荣易轻浮。
- 17.累，才是工作。
- 18.贵之而不骄。
- 19.舍，才是得到。
- 20.苦，才是人生。
- 21.对师要敬畏。
- 22.待人要谦和。
- 23.危之而不惧。
- 24.交有德之朋。
- 25.爱，才是慈悲。
- 26.循，才是超脱。
- 27.自矜者不长。
- 28.惜，才是布道。
- 29.对人要宽厚。
- 30.独，才是成熟。
- 31.忌非议之言。

32.生意要留心。

33.寡欲则理明。

34.处事要随和。

35.静，才是修养。

36.痛，才是经历。

37.寡交则业专。

38.变，才是命运。

39.忍，才是历练。

40.创伤易沉沦。

41.受骗易创伤。

42.工作要认真。

43.言不顺则悖。

44.自见者不明。

45.执，才是成功。

46.行不笃则危。

47.教子要向善。

48.对爱要真挚。

- 49.取本分之财。
- 50.择偶要般配。
- 51.自是者不彰。
- 52.态度要温和。
- 53.绝无义之友。
- 54.学，才是知识。
- 55.轻浮易受骗。
- 56.交不审则惑。
- 57.说话要适度。
- 58.委之而不专。
- 59.做，才是拥有。
- 60.寡言则行力。
- 61.忌牢骚之言。
- 62.交友要慎重。
- 63.忘，才是福气。
- 64.戒无名之酒。
- 65.容，才是智慧。

本文链接：<https://duanjuziku.com/duanjuzi/gfhmtmpkm8.html>